International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(6): 145-148

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(6): 145-148
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-08-2020
Accepted: 21-10-2020

डॉ0 धमेन्द्र कुमार शास्त्री
पूर्व सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी,
एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत विभाग,
एस0 जी0 एन0 डी0 खालसा
कॉलेज, देव नगर, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 धमेन्द्र कुमार शास्त्री
पूर्व सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी,
एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत विभाग,
एस0 जी0 एन0 डी0 खालसा
कॉलेज, देव नगर, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

वैदिक संहिताओं में ''सरस्वती''

डॉ0 धमेन्द्र कुमार शास्त्री

प्रस्तावना

वैदिक ज्ञान सबके लिए है। यह सार्वभौमिक है, सार्वकालिक है, सार्वजनिक है। प्राचीन एवं अर्वाचीन सभी विद्वानों ने इसे एकमत से स्वीकार किया है। वेदों में ऋषि, देवता, छन्द और स्वरों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। ऋग्वेद के तृतीय सूक्त में विशदरूप से सरस्वती देवता का वर्णन किया गया है। इस सूक्त के मन्त्र संख्या 10, 11, 12वें इन तीन मन्त्रों का देवता भी सरस्वती है।

इसके दशम मंत्र में सरस्वती की आराधना का फल बताया गया है। सरस्वती ज्ञानाधि देवता है। यह ज्ञान का देवता हमारे लिए पवित्रता प्रदान करने वाला हो। [1]

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु ध्यिावसुः।

मानव जीवन के सर्वागीण विकास हेतु हमें जिन चीजों की अत्यन्त आवश्यकता होती है। उनमें प्रमुख हैं – ज्ञान, कर्म एवं भक्ति। इन तीनों का समन्वय ही जीवन का सम्पूर्ण विकास करता है। हमारे जीवन में आत्मा को साधन के रूप में ज्ञानेद्रियाँ एवं कर्मेन्द्रियाँ प्राप्त हुई है। ज्ञानेद्रियों के माध्यम से ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियों के माध्यम से शुभाचरण करते हुए हे इन्द्र! जीव तुम सर्वागीण विकास प्राप्त करने में सक्षम बनते हो। ज्ञान की महत्ता सभी शास्त्रों में कही गई है। गीता में स्पष्टरूप से कहा गया है – न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमहि विद्यते। [2] ज्ञान ही अनुमप पवित्रता का सम्पादन करने वाला है। सारी मलिनता अज्ञानजन्य है। अज्ञान ही सारे क्लेशों का मूल है। इसका विस्तार से वर्णन योगादि दर्शनों में हुआ है। इस ज्ञान के माध्यम से ही सुख एवं स्वर्ग को प्राप्त किया जाता है। सरस्वती हमें लौकिक एवं पारलौकिक अभ्युदय एवं निः श्रेयस दोनों को प्राप्त कराती है। यह लौकिक अभ्युदय की साधिका है। तभी तो कहा है – ''वाजेभिर्वाजिनीवती'' (अन्नैरन्नवती इति यास्कः) प्रशस्त अन्नों की प्राप्त कराने वाली है। वाज का अर्थ शक्ति एवं त्याग भावना भी है।

इस सरस्वती की आराधना का तीसरा फल 'धियावसु' बताया गया है। निरूक्त में कहा है – 'कर्मवसुः' ज्ञानपूर्वक कर्मो से धन का सम्पादन करने वाला व्यक्ति यज्ञं वष्टु–यज्ञ की कामना करता है।

इस प्रकार प्रथम मन्त्र में सरस्वती की आराधना को अनेक फलों का साधन बताया गया है।

1. प्रत्येक व्यक्ति स्वाध्यायशील बनें, ज्ञानी बनें, अज्ञान को दूर करें। तमसों मा ज्योतिर्गमय के सिद्धान्त को जीवन में अपनाने का प्रयत्न करें।
2. कर्मो को विवेकपूर्वक की करें। धियावसुः। वेदों में धी (बुद्धि) की प्रार्थना है। धियो यो नः प्रचोंदयात [3]। यां मेधां देवगणाः [4]। सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् [5]। सोच – समझकर ही कार्य करना चाहिए। बिना विचारे जो करें सो पाछे पछताय।
3. शुभ कर्मो का आचरण करते हुए लौकिक एवं सांसारिक पदार्थो को प्राप्त करने की इच्छा करें। वाजेभिर्वाजिनीवती।
4. इन पदार्थों को प्राप्त करके इन्हें केवल अपने उपभोग एवं उपयोग के लिए ही प्रयोग न करें, अपितु त्यागपूर्वक यज्ञ की भावना मन में रखकर ''सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय'' की उदात्त भावना को ध्यान में रखकर इसका प्रयोग करना चाहिए। ''यज्ञं वष्टु'' यज्ञ की भावना, परोपकार की भावना से ही सबका कल्याण निहित है। यज्ञ के तीन अर्थ देवपूजा, संगतिकरण एवं दान की भावना परिवार, समाज एवं राष्ट्र को शक्तिशली बनाते है। यज्ञ का अर्थ (Minimum for self and maximum for others) मेरे लिए सबसे कम दूसरों के लिए अधिक की भावना मन में रखनी चाहिए। इस प्रकार सरस्वती की आराधना मानवीय गुणों को पल्लवित एवं पुष्पित करने में अधिकाधिक सहयोग प्रदान करती है।

एकादश मन्त्र में पुनः सुनृत–सुमति यज्ञ का विस्तार से फल बतलाया है।

चोदयित्री सुनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्।
यां दधे सरस्वती।। [6]

सुनृतानाम्–सु ऊन् ऋत् दुखों का परिहाण करनेवाली तथा सत्यवाणियों की प्रेरिका है। इससे वाणी सरल होती है। वाणी के अन्दर माधुर्य की प्राप्ति होती है। यह हमें सरलता की ओर ले जाती है।
(2) दूसरा फल बतलाया है ज्ञान का निरूपण करनेवाली यह वेदवाणी हमें उत्तम विचारों के प्रति प्रेरित करने वाली होती है। मस्तिष्क में कभी कुविचार नहीं उपजते। पवित्र विचारों का सृजन करती है। वाणी की पवित्रता निर्विकार भाव से देखने से होती है। कानों की पवित्रता अच्छे विचार सुनने से होती है। हाथों की पवित्रता दान देने से होती है। पादों की पवित्रता आचरण से ही होती है। हृदय की पवित्रता सद्भावनाओं से होती है। इस प्रकार यह सरस्वती देवी सम्पूर्ण इन्द्रियों को पवित्र एवं सक्षम बनाती है। तभी तो कहा गया है–

जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति तहाँ विपति निधाना।।

इसकी आराधना से आराधक के आचार एवं विचार सभी पवित्र बनते हैं।
यह ज्ञानाधिदेवता अपने उपासक के अन्दर यज्ञ को धारण करती है। अयाज्ञिक कर्मो को नहीं धारण करती ''यज्ञं दधे सरस्वती''।
द्वादश मन्त्र में सरस्वती को ज्ञान का महान् समुद्र बतलाया गया है –

महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना।
धियो विश्वा विराजति।। [7]

यह सरस्वती ज्ञानाधिदेवता महो अर्णः – एक महान् जल है। यह सरस्वती मानो ज्ञान का समुद्र ही है। ज्ञान अनन्त है इसकी कोई सीमा नहीं है। 'अनन्तशास्त्रं बहुलाश्च विद्या' प्रसिद्ध वैज्ञानिक न्यूटन सदा कहा करते थे – Knowledge is Virtue ज्ञान ही सद्गुण है। समुद्र के किनारे बैठकर जैसे रेत के कणों को जीवनभर समुद्र में फेंकता रहूँ तो भी वे समाप्त नहीं हो सकते वैसे ही ज्ञान की कोई सीमा नहीं सीमातीत है। परन्तु कहा गया है – ज्ञानं भारं क्रियां बिना। जबतक उसका जीवन में अवतरण नहीं होगा वह भारस्वरूप ही होगा। वेद में कहा है – 'मंत्रश्रुत्यं चरामसि' मंत्रों की श्रुति अनुसार चलें। ज्ञान के प्रकाश से जीवन पवित्र बन जाए। 'सा विद्या या विमुक्तये' जो विद्याा जीवन को सब प्रकार के दुःखों से विमुक्ति। दिलवाये वह ज्ञान है। जिससे जीवन सम्पूर्ण रूप से रूपान्तरित हो जाए, वही विद्या ज्ञान कहलाता है। उसी से अमृतत्तत्व की प्राप्ति होती है –'विद्ययाऽमृतमश्नुते' [8]। ज्ञान से अमृतत्त्व की प्राप्ति होती है। 'क्रोधं मा कुरू लोभं त्यज' केवल कथनमात्र की नहीं अपितु तदनुसार जीवन जीने की कला आनी चाहिए। तभी तो कहा है –
'प्रचेतयति केतुना' ज्ञान प्रकाश के द्वारा आराधक को प्रकृष्ट चेतना प्राप्त कराती है यह सरस्वती। उसके हृदयान्तक्षि को ज्ञान के प्रकाश से उद्योतित कर देती है।
यह सरस्वती – वेदवाणी, विश्वाधियः सम्पूर्ण ज्ञानों को विराजति विशेष रूप से दीप्त करती है, अर्थात् यह सब सत्य विद्याओं का आगार है।
निरूक्तकार सरस्वती शब्द का अर्थ नदी भी करते है – ''तत्र सरस्वतीत्येतस्य नदीवत् देवतावच्च निगमा भवन्ति'' सरस्वती शब्द के देवतार्थयुक्त और नदी अर्थ को लिए हुए मन्त्र है –

नद्यर्थयुक्त मन्त्र इस प्रकार है –
इयं शुष्मेभिर्विसखा.....सरस्वतीमाविवासेम धीतिभिः। [9]
इयं – यह सरस्वती नदी
दूसरा मन्त्र इस प्रकार है –
इमं में गंगे यपुने सरस्वति [10]

सर इति उदकनाम–सर जल को कहते हैं। सृ–गतौ तद्वती उस सरस्–जल से युक्त है अतः सरस्वती। यजुर्वेद में सरस्वती शब्द का प्रयोग मातृभाषा के अर्थ में व्याख्यायित किया है – तिस्त्रों देवी इडा सरस्वती मही भारती गृणाना। [11] मातृभाषा, मातृसभ्यता और पोषण करने वाली मातृभूमि – ये तीन देवताएँ इस यज्ञ में विराजें।
इसी प्रकार पष्ठम् काण्ड के सूक्त 94 के अनुसार तीन मन्त्रों का देवता सरस्वती ही है।
जिनमें परस्पर सहृदयता, साम≺जस्य तथा एकता की भावना पर जोर दिया गया है, इनमें सरस्वती 'देवी सरस्वती' कहा गया है। हे सरस्वति ! इदं ऋध्यास्म इससे हम सभी समृद्ध हों।
सरस्वती विद्या है। विद्या ही सबका पोषण करती है, सबको शान्ति सुख सुमनस्कता और पुष्टि देती है। विद्या से ही इहलोक में और परलोक में उत्तम गति प्राप्त होती है। इसलिए यह विद्या हर एक को अवश्य प्राप्त करनी चाहिए। हे सरस्वती देवी! वह तुम्हारा पोषक गुण हमारी ओर करो, जिससे उत्तम रस पीकर हम सब पुष्ट हो जाए।

यस्ते स्तन.....सरस्वति तमिह धातवे कः। [12]

सरस्वती का दूसरा अर्थ (सर0) रसवाली है। अर्थात् जल प्रदान करने वाली। वह जल अथाव रस मेघों में रहता है और वह हमारे धान्यादि की पुष्टि करती है।

यस्ते पृथुः स्तनयित्नुः.....रश्मिभि सूर्यस्य। [13]

यह ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी ! ज्ञान प्रवाह से, गुरु से शिष्य की ओर चलता है, अतः ज्ञान की अधिष्ठात्री 'सरस्वती' कहलाती है, यह प्रकाशमय होने से देवी है। सरस्वती का आराधक यज्ञावशिष्ट हव्य पदार्थो का ही सेवन करता है, इससे उसे दिव्य तेज प्राप्त होता है और घर में उत्तम सन्तान होती है।

सरस्वति व्रतेषु.....देवि रसास्व नः। [14]

(सरस्वती) वेदवाणी का आदान जीवन को निर्मल व दीप्त बनाता है। यह हमें रक्षणात्मक कार्यो में प्रवृत्त करता है और सब बुराइयों को इमसे दूर करता है। वेदवाणी के कथन शान्ति प्राप्त कराते हैं ओर हमारे जीवनों को मधुर बनाते हैं। [15]
सरस्वती का आराधन अर्थात् ज्ञानप्राप्ति की लगन हमें दिव्य–गुणसम्पन्न बनाकर प्रभु–प्राप्ति के योग्य बनाती है। ज्ञान ही मानव के जीवन को पवित्र व दिव्यगुणसम्पन्न बनाता है। यह हमें श्रेष्ठतम कर्म करने की प्रेरणा देता है, पुण्य कर्मो में प्रवृत है और सब शुभ एवं कल्याणकारी कर्मो को प्राप्त कराती है –

सरस्वती देवयन्तों हवन्ते.....सरस्वती दाशुषे। [16]

सरस्वती की आराधना से जीवन में रक्षणात्मक कार्यो में प्रवृति होती है, श्रेष्ठतम कर्म करने की प्रेरणा। सात्विक अन्नों का सेवन करते हुए सभी तीव्र बुद्धि वाले बनें ओर सरस्वती के आराधक हों।

सरस्वती पितरो हवन्ते। [17]

सरस्वती का आराधक आस्तिक होता है, आत्मशक्ति को धारण करता हे, वेदवाणी का अमूल्य ज्ञानधन प्राप्त करता है और आवश्यक धन का पोषक होता है।

सरस्वति या सरथं.....यजमानाय धेहि। [18]

ज्ञान हमें यशस्वी बनाये। यह सरस्वती यश, कीर्ति सेवन करने वाली है। प्रभुपाद सेवन तथा सरस्वती का आराधन इस प्रकार प्रभु के सम्पर्क में रहते हुए प्रत्येक दिन ज्ञान की उपासना में ही बीते।

सरस्वत्यै। य यशोभगिन्यै स्वाहा। [19]

सभी बालकों का सर्वांगीण विकास तभी सम्भव है, जब वे शरीर एवं मन से, स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। यह कार्य तभी सम्भाव होगा जब हम सब पवित्र बनेंगे। पितर, आचार्य, गुरुजन अपने प्रिय उपदेशों से इन बालकों के निर्माण में अपनी ज्ञानरूपी हवि प्रदान करेंगे।
ये पितर आचार्य अपनी क्रियात्मक प्रेरणओं से जीवन को पवित्र कर देंगे।
पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः [20]। इस मन्त्र का देवता सरस्वती है। इसमें अत्यन्त सौम्य शान्त स्वभाव वाले ज्ञानी, ध्यानी, संरक्षकों, आचार्यो और पितरों से ज्ञान की प्रार्थना की गई है। प्रत्येक मनुष्य के मुख में सरस्वती का निवास होता है। आसन् सरस्वती मुख व मस्तिष्क की उत्कृष्टता, पवित्रता के कारण ही मुख में विद्या की अधिदेवता का वास होता है।
सरस्वती का अर्थ ज्ञान को प्राप्त विदुषी स्त्री अर्थ भी किया गया है। गृहिणी को चाहिए कि गृहकार्यों को करते हुए आस्तिक भावना रखें। सात्त्विक अन्न को प्राप्त कराए। ईर्ष्या–द्वेष से ऊपर रहे। प्रभु के दिव्यांश को अपने में धारण करें। व्यवस्थित कर्मो से चमक उठे और प्रजाओं में राजा बनने के भी योग्य हो।
ज्ञान का प्रचार–प्रसार शिक्षा–दीक्षा सर्वत्र हो। प्रत्येक घर में पढ़े–लिखे युवक–युवतियाँ हो, तभी राष्ट्र का कल्याण सम्भव है। घर–घर में सब लोग ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हो। अशिक्षा, अज्ञान, अविद्या, अन्धकार तभी दूर हो सकेगा जब सब लोग ज्ञान–प्राप्ति के लिए प्रयन्तशील हों।
इस वेद मन्त्रांश का अभिप्राय यही है। विद्याभ्यास से और बढ़े हुए ज्ञान से मधुरता व शक्ति–सम्पन्नता आती है। यह सुमार्ग से उत्तम धनों का अर्जन करता है। ज्ञान केवल अर्जनमात्र का निमित न बनें, जीवन में क्रियाशीलता के साथ जुड़ा रहें। प्राणशक्ति के साथ श्रद्धा का मेल हो। यह ज्ञानाग्नि ईधन के रूप में कथित हो। पवित्र ज्ञान द्वारा हम सब इष्ट कामनाओं को सिद्ध करें–'दुहे कामान् सरस्वती'' [21] का अभिप्राय यही है। ज्ञान से हमें इन्द्रियों की शक्ति व सौन्दर्य प्राप्त हो। क्षात्रशक्ति व ब्रह्मशक्ति दोनों संगत होकर हमारे जीवन को सुन्दर ही सुन्दर बनाए। 'समजाते सरस्वत्या'। [22] हे सरस्वती–ज्ञानधिदेवते नक्तम–रात्रि में पाहि–हमारे रक्षा की जाए। यह सरस्वती हमारे अन्धकार को दूर करती है। तथा दिव्यगुणों को प्राप्त कराती है। – पाहि नक्तं सरस्वती। [23] यह सरस्वती, भारती, वाणी तथा इड़ा–श्रद्धा मनुष्य का सर्वविध विकास करती है – 'सरस्वत्यश्विना भारतीडा'। [24]
यह सरस्वती हमारे लिए (भेषजम्) कितनी सुन्दर औषध बनती है। यह हमें उत्कृष्ट आनन्द प्राप्त कराती है, जो हमें इस संसार में होने वाले ईर्ष्या, द्वेष व पारस्परिक कलहों में नहीं फँसने देता है – भेषजं नः सरस्वती''। [25]
यह सरस्वती शरीर में स्थित प्राणापान को ठीक रखती है, स्वार्थ–त्याग को समाप्त करती है। ध्यान व ज्ञान के द्वारा जीवन में विकास करें। प्राणायाम्, ध्यान, साधना, स्वाध्याय इनके द्वारा जीवन को निर्मल, स्वच्छ, स्वस्थ व नीरोग बनावें। यह संदेश यजुर्वेद के 20वें अध्याय के मन्त्र संख्या 55 से लेकर 90 तक दिया गया है। जिनका देवता 'अश्विसरस्वतीन्द्राः' है।

प्रत्येक व्यक्ति यह कामना करता है कि उसे तीन दिव्य भावनओं की प्राप्ति हो। ये तीन दिव्य भावनाएँ इडा–पृथिवी स्थानीय देवता है, सरस्वती–अन्तरिक्ष स्थानीय देवता है और भारती–द्युलोक स्थानीय देवता। 'इडा;' निघण्टु में 'अन्न का नाम है। (2.6) वस्तुतः जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भाग इड़ा का है अन्न पर ही जीवन का निर्माण निर्भर करता है, जैसा अन्न वैसा मन – You are, what you eat.
मन सरस्वान् है और उस मन की शक्तिः 'सरस्वती' है। इसके बाद भारती 'भरत=आदित्यः तस्य भाः भारती।' (नि0 8.1) सूर्य के समान देदीप्यपान ज्ञान है। इस प्रकार सबके जीवन में यज्ञिय अन्न मानस शक्ति व सूर्यसम देदीप्यमान ज्ञान तीनों का महत्वपूर्ण स्थान है।
तिस्त्रो देवी.....इडा सरस्वती भारती। मही गृणाना। [26] भारती ज्ञान है। सरस्वती शिक्षा व सभ्यता है। इडा (A law) जीवन का एक नियम है। ये सबके सब हमें अमृत बनाते है। ये हमें यज्ञमय जीवन वाला बनाता है।

आदित्यैर्नो भारती वष्टु यज्ञम् सरस्वती सह रूद्रैर्न आवीत्
इडोपहूता वसुभिः सजोषा यज्ञं नो देवीं रमृतेषु धत्त।। [27]

मताएँ सरस्वती हों। बच्चों की सर्वांगीण उन्नति की साधिका हों। अन्नमय, प्राणमय आदि पाँच कोषों से सब से सब सन्तानों को आगे बढ़ाने वाली बनती है।

पचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति....। [28]

शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच ज्ञानवाहिनी नदियाँ है। चक्षु से प्रवाहित होने वाली ज्ञाननदी रूप–जल से भरी है तो श्रोत्र से चलने वाली शब्दरूप जल से एवं एक–एक भौतिक संसार हमारे ज्ञान का विषय बन जाता है और इस प्रकार ज्ञान जलवाहिनी सरस्वती नदी पूर्ण जलौघ के साथ बह चलती है। ज्ञानजलौघ से युक्त गृहिणी को भी यहाँ 'सरस्वती' ही नाम दिया गया है। गतमन्त्र में यह सिनीवाली=अन्न से दोषों को देर कर अपना पूरण करने वाली थी और वस्तुतः उस सात्त्विक अन्न के सेवन ने ही इसे 'सरस्वती' बनने की क्षमता प्राप्त कराई है। इस सरस्वती को पाँच समान स्त्रोतवाली ये ज्ञान–जलवाहिनी नदियाँ प्राप्त होती है। अर्थात् यह उत्तम गृहिणी सदा अपनी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञान–प्राप्ति के प्रयत्न में लगी रहती है। वेद का यह उपदेश कि 'पंचौदनः पंचधा विक्रमताम्' = पचौदन जीव पाँचों ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञान–प्राप्ति में लगा रहे, कभी उत्तम पत्नी भूलती नहीं तभी तो वस्तुतः वह सचमुच ज्ञान की अधिदेवता बन पाई है। यह पत्नी तो ज्ञान की अधिदेवता बनकर निश्चय से जिस गृह में व क्षेत्र में काम करती है उस प्रदेश में कार्य को सुन्दर रूप से चलानेवाली (सृ–गतौ) होती है। अज्ञान में क्रिया गलत होती है, ज्ञान क्रिया में पवित्रता व कुशलता को ले–आता है। एवं 'सरस्वती' अपने घर का संचालन ऐसे अच्छे ढंग से करती है कि पाँचों प्रकार से, अर्थात् अन्नमयादि पाँचों कोशों के दृष्टिकोण से सब सन्तानों को आगे बढ़ाने वाली बनती है। अपने सन्तानों के अन्नमयकोश को नीरोगं बनाती है, प्राणमय को सबल, मनोमय को निर्मल, विज्ञानमय को दीप्त और आनन्दमयकोश को सदा सोल्लास बनाने वाली होती है। यह है 'सरस्वती' का पचवधासरित्' होना=पाँच प्रकार से बच्चों को आगे बढ़ाना माताएँ सरस्वती हों, बच्चों की सर्वांगीण उन्नति की साधिका हों।
प्रत्येक बालक व बालिका की ज्ञान व शिक्षा–प्राप्ति में रुचि हो। सुशिक्षित होने की प्रबल कामना हो – 'सरस्वत्यै पिन्वस्व।' [29]
वस्तुतः ऋग्वेद है ही विज्ञान वेद। वह प्राकृतिक विद्याओं (Natural science) को अपना विषय बनाता है। यह ज्ञान (सरस्वती) ही प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को निर्मल बनाता है, पवित्र करता है। जिस प्रकार अग्नि में पड़कर सोना निखर जाता है, उसी प्रकार ज्ञनाग्नि में तपकर मानव निखर कर निर्मल हो जाता है।

वह ज्ञान हमें शक्तिशाली बनाये। वाजेभिः– अन्नमय, प्राणमय, मनोमय आदि सभी पञ्चकोशों को बलयुक्त करेगा।
पवित्र और शक्तिशाली बनकर हम सदा यज्ञिय जीवन वाले बनें। हमारे जीवन से कुछ न कुछ लोकहित का कार्य होता रहें।
पावका नः सरस्वती का सही संदेश है कि यह वेदवाणी सरस्वती जिनका अध्ययन–अध्यापन, मनन–चिंतन, ध्यान, श्रवण–श्रावण हमें किन–किन पदार्थो को प्रदान करता है। यह सरस्वती देवी हमें क्या–क्या प्रदान करती है। इसका रोचक शैली में सामवेद के कतिपय मन्त्रों में दिग्दर्शन कराया है।

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम्।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्।। [30]

जो जीवन को पवित्र करने वाली इन ऋचाओं को पढ़ता है, जिनके द्वारा ऋषियों ने अपने जीवन में रस का संचार किया, अपने जीवन को रसमय बनाया, उस व्यक्ति के लिए ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती दोहती है, उसका निम्न वस्तुओं से पूरण करती है। दूध, जो उत्तम निवास व गति का कारण बनता हैं दूध के पान से मनुष्य का शरीर नीरोग तो बनता ही है, परन्तु साथ ही वह उत्तम गतिवाला'–क्रियाशील भी रहता है। घृत, जोकि उसे दीप्त बनाता है, उसके मलों का नाश करता है और इस प्रकार उसे उत्तम क्रियाशील बनाता है। शहद, जोकि उसे उत्तम मस्तिष्क वाला बनाता है। पानी जो उसके शरीर में शुष्कता नहीं आने देता और उसके शरीर को सदा चमकीला बनाये रखता है, अर्थात् पावमानी ऋचाओं का अध्ययन करने वाला अपने शरीर के धारण के लिए इन चार वस्तुओं को अधिक महत्त्व देता है और अपने जीवन को उन ऋषियों की भाँति ही रसमय बनाने का ध्यान करता है।

पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः।
ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेश्वमृतं हितम्।। [31]

ये ऋचाएँ हमारे जीवनों को पवित्र करने वाली हैं – मनोवृत्ति को उत्तम बनाकर ये हमारे जीवनों को सुन्दर बना देती हैं। ये हमें सदा कल्याण के मार्ग पर ले चलनेवाली हैं, उत्तम कर्मो की प्रेरणा द्वारा हमें अशुभ मार्ग से निवृत करती हैं। उत्तम वस्तुओं का हममें पूरण करने वाली है। हमारे मनों में उत्तम भावनाओं को भरने वाली हैं। निश्चय से ये हममें दीप्ति को प्राप्त कराने वाली है, मलों को दूर करके हमारी बुद्धियों की कुण्ठा को नष्ट करके ये हमारे ज्ञान को दीप्त करती हैं।
इन्ही के द्वारा मन्त्रार्थद्रष्टाओं ने अपने जीवन में रस का संचार किया अपने जीवन को मधुर बनाया और इन्हीं के द्वारा ब्रह्मज्ञानियों में मोक्ष निहित हुआ। इन्हीं का आश्रय करके उन्होंने अमरता का लाभ किया।

पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथो अमुम्।
कामान्त्समर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः।। [32]

हमारे जीवनों को पवित्र करनेवाली ये ऋचाएँ हमें धारण करें। हमारे इस लोक का तो पोषण करें ही, और निश्चय से परलोक का भी धारण करें। हमारे इस लोक को ये रसमय बनाएँ तो हमारे परलोक को मोक्षामृत प्राप्त कराने वाला करें। ये हमारे इष्ट कामों को समृद्ध करने वाली हों इस लोक में हमें इष्ट काम्य पदार्थो को ये प्राप्त कराने वाली हो। इनके अन्दर दिया गया विज्ञान हमें प्राकृतिक पदार्थों का सुखमय उपयोग करने में सशक्त करें तथा दिव्य गुणोंवाले पुरूषों से संगृहीत हुई–हुई ये पावमानी ऋचाएँ सचमुच हमें दिव्य बनाने वाली हों। इनके द्वारा हमारा जीवन ऊँचा और उँचा होता चले। इस लोक में ये हमें वैज्ञानिक उन्नति द्वारा अभीष्ट पदार्थ प्राप्त कराके अभ्युदय को प्राप्त करने वाला बनाएँ और ज्ञान से हामरे जीवनों को दिव्य गुणयुक्त करती हुई परलोक में हमारे निःश्रेयस की साधक हों।

येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा।
तेन सहस्त्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः।। [33]

देवलोग जिस ज्ञान के द्वारा अपने को हमेशा पवित्र करते हैं उस सहस्त्रों वाणियों वाले वेद से ये पवित्र ऋचाएँ हमें पवित्र कर डालें। वेद ज्ञान की वाणियों से परिपूर्ण है। ये ज्ञान की वाणियाँ पवित्र करने वाली हैं। जैसे जलों की शतशः धाराएँ हमारे बाह्य मलों को धो डालती हैं, इसी प्रकार वेद की ये ज्ञानात्मक धाराएँ हमारे अन्तःकरणों को शुद्ध कर डालें। ज्ञान ही पवित्र है। ये ऋचाएँ ज्ञान से परिपूर्ण हैं, अतः ये सचमुच 'पावमानी' हैं।

पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ताभिर्गच्छति नान्दनम्।
पुण्याँश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति।। [34]

हमारे जीवनों को पवित्र करने वाली ऋचाएँ हमें उत्तम मार्ग से ले चलनेवाली हैं। इनका अध्ययन हमें ऐसी प्रेरणा देता है कि हम अशुभ मार्गो को छोड़कर शुभ मार्ग पर ही चलते है। इन ऋचाओं के द्वारा मनुष्य परमानन्द के धाम प्रभु को प्राप्त करता है। शुभ मार्ग पर चलता हुआ अन्त में प्रभु के समीप पहुँचता ही है। इन पावमानी ऋचाओं को पढ़ने पर यह पुण्य ही भोजनों को खाता है और मोक्ष को प्राप्त करता है। संक्षेप में वेदाध्ययन के लाभ निम्न है। – 1. पवित्रता, 2. शुभ मार्ग से चलना, 3. प्रभु के आनन्दधाम को प्राप्त करना, 4. सात्त्विक भोजन के सेवन की रूचि, 5. मोक्ष–प्राप्ति तथा असमय में मृत्यु का न होना।

सन्दर्भ

1. ऋग्वेद. 1.3.10
2. गीता, श्लो0 5.38
3. यजुर्वेद 3.35
4. यजु0 32.14
5. किरातार्जुनीयम्
6. ऋग्0 1.3.11
7. ऋग्0 1.3.12
8. यजु0 40.14
9. ऋग्0 6.61.2
10. ऋग्0 10.75.5
11. यजु0 27.19
12. अथर्व0 7.10.11
13. अथर्व0 7.11.12
14. अथर्व0 7.68.1
15. अथर्व0 7.68.2
16. अथर्व0 18.1.41
17. अथर्व0 18.1.42
18. अथर्व0 18.1.43
19. यजु0 2.20
20. यजु0 20.37
21. यजु0 20.60
22. यजु0 20.61
23. यजु0 20.62
24. यजु0 20.63
25. यजु0 20.64
26. यजु0 27.19
27. यजु0 29.8
28. यजु0 34.11
29. यजु0 38.4
30. सामवेद उत्तरार्चिक 1299
31. वही, 1300
32. वही, 1301
33. वही, 1302
34. वही, 1303